The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

हिन्द महासागर में महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धाः भू–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य एवं भारत की सामरिक भूमिका

डॉ. वन्दना मिश्रा

सहायक आचार्य भूगोल कुटीर पी. जी. कालेज, चक्के जौनपुर

मुकेश दुबे, शोध छात्र

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18900075

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 22-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

सामरिक दृष्टि, कूटनीतिक, अन्तर्राष्ट्रीय, हिमतक्षेस, गुटनिरपेक्ष, शीतयुद्ध

ABSTRACT

हिन्द महासागर प्राचीन काल से ही वैश्विक व्यापार, सांस्कृतिक संपर्क, ज्ञान तथा सामरिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है। एशिया, अफ्रीका एवं ऑस्ट्रेलिया महाद्वीपों के मध्य स्थित हिंद महासागर न केवल विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति और समुद्री शक्ति–संतुलन का एक निर्णायक क्षेत्र भी है। 21 वीं सदी में जब ऊर्जा संसाधनों, समुद्री व्यापारिक मार्गों तथा सामरिक ठिकानों का महत्व बढ़ रहा है, तब हिन्द महासागर पर अपनी पकड़ को मजबूत करने हेतु महाशक्तियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात औपनिवेशिक शक्तियों के पतन और शीत युद्ध की राजनीति ने हिन्द महासागर क्षेत्र को वैश्विक रणनीति के एक संवेदनशील क्षेत्र के रूप में स्थापित किया। संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ (रूस), ब्रिटेन, फ्रांस तथा हाल के दशकों में चीन जैसी महाशक्तियों ने इस क्षेत्र में अपने सैन्य, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक हितों का विस्तार किया। इस प्रतिस्पर्धा ने न केवल क्षेत्रीय असंतुलन को जन्म दिया, बल्कि तटीय एवं द्वीपीय देशों की सुरक्षा, संप्रभुता तथा विकास पर भी गहरा प्रभाव डाला। हिन्द महासागर का भू–रणनीतिक महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि विश्व व्यापार का एक बड़ा भाग इसी महासागर से होकर गुजरता है। ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, व्यापारिक सुरक्षा, जलडमरूमध्यों पर नियंत्रण तथा नौसैनिक शक्ति का विस्तारकृये तत्व इस क्षेत्र को वैश्विक राजनीति का महत्वपूर्ण आधार बनाते हैं। ऐसे में महाशक्तियों की बढ़ती उपस्थिति और सैन्यीकरण ने हिन्द महासागर को सहयोग के क्षेत्र से

प्रतिस्पर्धा और संघर्ष की संभावनाओं वाले क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया है। भारत, जिसकी लंबी तटीय सीमा और ऐतिहासिक समुद्री परंपरा रही है, हिन्द महासागर क्षेत्र में एक केंद्रीय शक्ति के रूप में उभरता है। भारत की आर्थिक प्रगति, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार तथा राष्ट्रीय सुरक्षा प्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र से जुड़ी हुई है। अतः हिन्द महासागर में महाशक्तियों की गतिविधियाँ भारत की सामरिक नीति, विदेश संबंधों और क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य हिन्द महासागर में महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा के स्वरूप, उसके भू–राजनीतिक प्रभावों तथा भारत की भूमिका का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन न केवल वैश्विक शक्ति–संतुलन को समझने में सहायक है, बल्कि भारत के लिए भावी सामरिक चुनौतियों और संभावनाओं को भी स्पष्ट करता है।

शोध समस्या–

हिन्द महासागर क्षेत्र में महाशक्तियों की बढ़ती सैन्य एवं रणनीतिक उपस्थिति ने क्षेत्रीय असंतुलन, संप्रभुता हनन, सुरक्षा चुनौतियाँ तथा राजनीतिक तनाव उत्पन्न कर दिए हैं। प्रश्न यह है कि क्या यह प्रतिस्पर्धा क्षेत्रीय स्थिरता के लिए अनुकूल है, या यह भारत एवं अन्य तटीय देशों की संप्रभुता और सुरक्षा के लिए चुनौती बन रही है?

शोध के उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- हिन्द महासागर के भू–राजनीतिक महत्व का विश्लेषण करना।
- इस क्षेत्र में महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा के कारणों और स्वरूप को समझना।
- हिन्द महासागर में चीन, अमेरिका, रूस, यूरोपीय देश एवं अन्य शक्तियों की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- भारत की सामरिक स्थिति और सुरक्षा हितों का अध्ययन करना।
- क्षेत्रीय शांति एवं सहयोग की संभावनाओं का आकलन करना।

प्रस्तावना–

अमेरिकी नौसैनिक विशेषज्ञ अल्फ्रेड महान ने हिन्द महासागर की महत्ता को ध्यान में रखकर 19वीं शताब्दी के मध्य में ही कहा था कि भविष्य मे सभी युध्दो का निर्णय, स्थल पर न होकर सागर पर होगा जो भी राष्ट्र हिन्द महासागर पर नियन्त्रण स्थापित करेगा वही एशिया को अपने प्रभुत्व में रखेगा। यह सभी समुद्रो की कुंजी है।

21वीं शदी में विश्व के भाग्य का फैसला इसकी समुद्री सतह पर होगा। वर्तमान समय में हिन्द महासागर विश्व का ऐसा क्षेत्र है, जो अस्थिर और अशान्त है। राजनीतिक हलचल और महाशक्तियों की प्रतिद्वंदिता, इस क्षेत्र की मूल विशेषताएं है। जबसे नौसैनिक शक्ति के महत्व को समझा जाने लगा है, विशेषकर द्वितीय महायुध्द के बाद से, तब से यह क्षेत्र संघर्ष, तनाव और टकराव का केन्द्र बन गया है। अपना नौसैनिक वर्चस्व स्थापित करने के लिए विश्व की महाशक्तियां विशेषकर अमेरिका व सोवियत संघ, हिन्द महासागर में अपनी उपस्थिति बढ़ाती रही है।

हिन्द महासागर, प्रशान्त और अटलांटिक महासागरों के बाद विश्व का तीसरा बड़ा महासागर है जो एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया वं अंटार्कटिका महाद्वीपों के बीच स्थित है। यह उत्तर में स्थल से घिरा हुआ है परन्तु दक्षिण में खुला है। अन्तर्राष्ट्रीय जल सर्वेक्षकीय संगठन (प्दजमतदंजपवदंस भ्लकतवहतंचीपब व्तहंदप्रंजपवद) ने अण्टार्कटिका के तट को हिन्दमहासागर की दक्षिणी सीमा के रुप में मान्यता दी है।

विश्व में हिन्द महासागर एकमात्र ऐसा महासागर है, जिसका नामकरण किसी देश के नाम पर है इसके पश्चिम में अफ्रीका, पूरब में आस्ट्रेलिया महाद्विप अवस्थित है। इसका जल आस्ट्रेलिया, एशिया और अफ्रीका महाद्वीप को स्पर्श करता है। हिन्द महासागर के तटवर्ती राष्ट्रों की संख्या लगभग 51 है। विश्व की एक तिहाई जनसंख्या का निवास क्षेत्र है। हिन्द महासागर से निकास के सीमित मार्ग हैं। स्वेज नहर पाश्चात्य जगत को जोड़ने वाला एक कृत्रिम जलमार्ग है। यूरोप तक जाने वाला दूसरा जलमार्ग अफ्रीका के चारों ओर घूमकर गुजरता है। पूर्वी भाग में निकास के दो मार्ग है। एक इण्डोनेशिया के द्वीपों के मध्य से होकर एवं दूसरा आस्ट्रेलिया के दक्षिण से होकर इन निकास मार्गो पर नियंत्रण कर हिन्द महासागर को आसानी से अवरुध्द किया जा सकता है। महासागर एवं इसके तटवर्ती देशों के प्रभूत संसाधन से इस क्षेत्र की भू राजनीतिक सामरिकता में इस तरह की संभावना को बल मिलता है। अमेरिका द्वारा हिन्द महासागर में स्थित ब्रिटिश अधिकृत टापू दियागो गार्सिया में अमेरिकी सैनिक अड्डा कायम करने के निर्णय से भी 1974 ई. में भारत–अमेरिकी संबन्ध में तनाव आया।

कन्याकुमारी से बारह सौ मील दूर पर स्थित इस छोटे से टापू में अमेरिका और ब्रिटेन ने अपनी वायुसेना और नौ सेना के द्वारा एक अड्डा कायम करने के फैसले के पीछे कोई आक्रामक उद्देश्य नहीं है। अमेरिका प्रशासन का कहना था कि हिन्द महासागर में सोवियत नौ सेना की बढ़ती हुई गतिविधियों से आशंकित होकर और संतुलन कायम करने के लिए उसने इस क्षेत्र में नौसेना का विस्तार करने की योजना बनाई है लेकिन भारत और एशिया के अन्य देशो ने एक स्वर में इस योजना का विरोध किया । श्रीमती गाँधी ने इस आंग्ल अमेरिकी निर्णय की भर्त्सना की और शान्ति के लिए इसे खतरनाक बताया उन्होने कहा कि इससे एशिया में अशांति बढ़ेगी दियागो गार्सिया के विवाद को लेकर जब अमेरिकी राजदूत मोचमिहन ने कहा कि यह तो संयोग की बात है कि भारत तथा दियागो गार्सिया के आस–पास का समुद्र हिन्द महासागर के नाम से जाना जाता है वैसे उसको मैडागास्कर सागर कहा जाय तो कोई हर्ज नहीं तब भारत ने इसकी तीव्र प्रतिक्रिया दी।

हिन्द महासागर में तटवर्ती देशों के सहारे कई सीमान्त सागर पाये जाते हैं। इनमें मालागासी सागर लाल सागर अदन की खाडी, फारस की खाडी, ओमान की खाडी, अरब सागर, लक्षद्वीप सागर, पाक जलसंधि, बंगाल की खाडी, अण्डमान सागर, सिंगापुर जलसंधि, युवा सागर, तिमोर सागर, अराफुरा सागर, कारपेण्टेरिया की खाडी, टोरस जलसंधि एवं ग्रेट ऑस्ट्रेलियन बाइट, स्पेसर की खाडी एवं बास जलसंधि आदि प्रमुख है। अन्य महासागरो की तुलना मे इस महासागर में सीमांत सागरो की संख्या अधिक पायी जाती है। जो उत्तर में अरब तट से दक्षिण में अंटार्कटिका तक फैले है।

उत्तर से दक्षिण स्थित मध्य महासागरीय कटक हिन्द महासागर को दो भागो में विभाजित करती है। इस पर सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कई द्वीप स्थित है जिनमे सेण्टपॉल, रोड्रिभुज, चौगोस द्वीप समूह प्रमुख है। मध्यवर्ती श्रेणी से निकलने वाली उप श्रेणियों जैसे– सेशैल्स मारिशस श्रेणी पर सेशैल्स, मारिशस एवं रियूनियन द्वीप, दक्षिणी–पश्चिमी श्रेणी पर प्रिंस एडवर्ड द्वीप एवं करगुलेन पठार पर हर्ड एवं करगुलेन द्वीप स्थित पाये जाते हैं। अण्डमान, कोकोस एव क्रिशमश द्वीपों की स्थिति महासागर के पूर्वी भाग में पायी जाती है इनमे से अधिकांश द्वीपों पर ग्रेटब्रिटेन, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन आदि यूरोपीय उपनिवेशी देशों का अधिकार रहा है। इनमे से कई द्वीपो का उपयोग आज संयुक्त राज्य अमेरिका एवं उसके सहयोगी देश सैनिक अड्डो के रुप में कर रहे हैं। सामरिक महत्व के अधिकांश अड्डे महासागर के पश्चिम भाग में केद्रित है जबकि पूर्वी भाग में इनकी संख्या सीमित है। कुछ अड्डे तटीय भाग को तटवर्ती देशो के क्षेत्रों में भी स्थित हैं।

द्वितीय विश्व युध्द के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। विश्व मानचित्र पर अमेरिका का महाशक्तियों के रुप में उदय हुआ ब्रिटिश सरकार द्वारा मॉरीशस से 1965 ई. में वी. आई. ओ. टी. क्षेत्र मे सम्मिलित करने हेतु डियागो गार्सिया का अड्डा ले लिया जिसे 1966 ई. में एक सैनिक अड्डे में परिवर्तित कर दिया पाश्चात्यवासी लम्बे समय से हिन्द महासागर का इस्तेमाल अपनी जरुरतों के लिए करते आ रहे है यहाँ पर व्यापार के लिए कार्य लम्बे समय से सम्पादित हो रहा है।

पूर्व सोवियत संघ रुस– पूर्व सोवियत संघ ने इस क्षेत्र में हस्तक्षेप तब किया जब अमेरिका ने इस क्षेत्र मे अपनी पोलरिज ए– 3 मिसाइले लगाई। सन् 1968 मे पांच युध्द पोतों का एक सोवियत नौसैनिक स्ववेडन दक्षिण एशिया अरब सागर, फारस की खाडी आदि। बंदरगाहो में पहुँचा लेकिन अमेरिका के समान पूर्व योवियत संघ के पास इस क्षेत्र में कोई स्थायी अड्डा नही है। सोवियत संघ के विघटन के बाद उसका उत्तराधिकारी रुस इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति कम कर दिया है।

ऐतिहासिक, राजनैतिक, भौगोलिक एवं आर्थिक रुप से हिन्द महासागर मे यूरोपीय लोगो को प्राचीन समय से जुड़ाव रहा है, यही कारण है कि अमरीका, भारत, चीन सभी देश यहाँ संघर्ष करते है ।

चीन मोती की माला की नीति– मोती की माला की नीति न तो केवल एक नौ सैनिक अथवा सैन्य रणनीति है न ही केवल क्षेत्रीय नीति है, बल्कि चीन की एक बृहद महत्वाकाक्षी नीति है, जिसके माध्यम से वह अपने सैन्य एवं आर्थिक प्रभाव का विस्तार कर एक महाशक्ति के रुप नें भविष्य में स्थापित होना चाहता है। मोती की माला की प्रत्येक मोती चीन द्वारा भू– राजनीति प्रभाव के विस्तार के लिए गये विभिन्न देशों के साथ उसके सम्बन्ध को दर्शाता है अथवा चीन के द्वारा एशिया के स्थानों पर उपस्थिति उसकी सैन्य गठबन्धन तथा सैन्य बेस को दर्शाता है यदि हम मानचित्र को ऊपर से देखे तो हिन्द महासागर उसे विशाल रुप से दिखायी पडेगा इसमें सबसे बड़ी बात है कि हिमालय से टकराकर आने वाली हवायें इसके मौसम को हवा के द्वारा व्यापार के अनुकूल बना देती है।

भारत ने 1962 ई. से ही म्यामांर के लोकतंत्र समर्थक आन्दोलन का समर्थन करने में अपनी सारी शक्ति गँवा दी। म्यामार के शेष दुनिया से अत्यधिक अलगाव का चीन ने फायदा और उठाया तथा वहां अपनी गहरी पकड़ विसित कर लिया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 26 वें अधिवेशन में 16 दिसम्बर 1971 ई. को हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करने सम्बन्धी घोषणा–पत्र स्वीकार किया गया। इसका मसौदा निम्न 13 देशों ने तैयार किया इराक, ईरान, कीनिया, जाम्बिया, तैजानिया, बुरुण्डी, भारत, यमन, युगाण्डा, यूरोस्लाविया, श्रीलंका, सोमालिया और स्वाजिलैण्ड। इस घोषणा पत्र में कहा गया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा यह विश्वास रखते हुए कि विशाल भौगोलिक क्षेत्र में शान्ति क्षेत्र की स्थापना समानता और न्यास के आधार पर शान्ति लाने पर सुप्रभाव डाल सकती है। संयुक्त राष्ट्र संघ के ध्येयों और सिध्दांतों के अनुरुप घोषणा करती है कि "हिन्द महासागर को उन सीमाओं में, जिन्हे अभी निर्धारित किया जाना है इसके ऊपर कैसे आकाशीय क्षेत्र तथा उसके समुद्र तल सहित इस प्रस्ताव द्वारा चिरकाल के लिए शान्ति क्षेत्र घोषित किया जाता है।"

घोषणा पत्र में खड़े देशो से आह्वान किया गयाकि वे हिन्द महासागर में सैनिक उपस्थिति का विस्तार करने यहाँ से अपने सभी फौजी अड्डे, फौजी ठिकाने, नाभिकीय संयत्र और जनसंहार के शस्त्र हटाने या अपनी सैंनिक उपस्थिति का प्रदर्शन समाप्त करने के उद्देश्य से तटवर्ती देशों इस क्षेत्र के निकटवर्ती देशों, सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य देशों का भी आह्वाव किया गया कि वे इस बात को आवश्यक प्रत्याभूमि कि हिन्द महासागर के इलाके में जो युध्दपोत और वायुसैनिक टुकड़ियाँ है वे बल प्रयोग का खतरा पैदा नहीं करेगी वे हिन्द महासागर के तटवर्ती या निकटवर्ती किसी देश की सम्प्रभुता क्षेत्रीय अखण्डता या स्वतन्त्रता को खतरे में न डालें।

26 वें अधिवेशन में इस प्रस्ताव के पक्ष में 6 देशो ने मत दिया और 55 ने मतदान में भाग नहीं लिया । इसके विरुध्द किसी ने मत नहीं दिया सन 1993 में महासभा ने हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र बनाने का संकल्प पारित किया इस संकल्प से हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करने की 1971 ई. की घोषणा का अनुसरण किया गया।

भारत हिन्द महासागर क्षेत्र की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है, अतः इस क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाने के लिए प्रयत्नशील है। भारत इस बात का समर्थन करता है कि हिन्द महासागर शान्ति क्षेत्र घोषित किया जाय सभी विदेशी अड्डों का उन्मूलन हो यहां नाभिकीय शस्त्र तथा जनसंहार के दूसरे शस्त्र न लगाये जायें । तटवर्ती और तटेत्तर देशों के विरुध्द नाभिकीय अस्त्रों का उपयोग न हो और सभी नाभिकीय राष्ट्र तत्सम्बन्धी दायित्व ग्रहण कर लें यहां ऐसी सशस्त्र सेनाएं और शस्त्र न रखे जायें जो इस क्षेत्र के देशों की सम्प्रभुता, क्षेत्रीय अखण्डता और स्वतन्त्रता के लिए खतरा पैदा करें। भारत की इन प्रस्थापनाओं की पूर्ति से हिन्द महासागर वास्तव में ही शान्ति क्षेत्र बन सकता है। मार्च, 1983 ई. में दिल्ली में हुए गुटनिरपेक्ष देशों के सातवें शिखर सम्मेलन में हिन्द महासागर के प्रश्न की ओर विशेष ध्यान दिया गया।

हिन्द महासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संगठन (हिमतक्षेस) (Indian Ocean Rim Association for Regional Co-Operation, IORARC)-

मॉरीशस की पहल पर मार्च, 1997 ई. में भारत तथा अन्य देशों ने हिन्द महासागर के तटवर्ती देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से "इण्डियन ओशन रिम एसोसिएशन फॉर रीजनल कोऑपरेशन" अर्थात् हिन्द महासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संगठन हिमतक्षेस के गठन की घोषणा की। इस संगठन में एशिया, अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया के वे देश शामिल हैं जो हिन्द महासागर के तट पर बसे हुए हैं।

मराओ, मालदीव की राजधानी माले से 40 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। मराओ प्रवाल द्वीप पर नौसैनिक केन्द्र की स्थापना से हिन्द महासागर में चीन खुद को महाशक्ति के रूप में स्थापित कर सकेगा, जिससे मलक्का जलडमरुमध्य से लेकर होर्मुज जलडमरुमध्य तक महत्वपूर्ण व्यापारिक तेल वहन के समुद्री मार्गों पर चीन की प्रभुता स्थापित हो जायेगी। श्रीलंका में तेल की खोज उसके हंबनटोटा पत्तन के विकास तथा वहाँ के बंकरों का निर्माण, ढ़ांचागत विकास परियोजनाओं में सहयोग आदि क्षेत्रों में चीन के प्रवेश के अलावा दोनों देश के बढते व्यापारिक तथा सैन्य सहयोग का निश्चित रूप से हिन्द महासागर क्षेत्र पर प्रभाव पडेगा ।

बांग्लादेश के चिट्गांव में एक कन्टेनर पोर्ट को विकसित कर रहा है, सोनादिया टापू पर बनने वाला यह बन्दरगाह बांग्लादेश का ग्वादर होगा। इसके अलावा हिन्द महासागर के देश चीन की माला की एक–एक मोती होंगे, पाकिस्तान का ग्वादर बंदरगाह पर वह सैन्य अड्डा का विकास किया। म्यांमार के हियांगयी अक्नाब क्यून, मरगुई, थाईलैण्ड के आएम चबांग, कम्बोडिया के सिंहानुकविले, मारीशस के गराओ प्रवालद्वीप पर अपनी नौवहन प्रणालियों के पुनर्भरण की सुविधा स्थापित कर ली।

हिन्द महासागर एवं भारतीय सुरक्षा निति भारत हिन्द महासागर के केन्द्र–

यह तीन ओर से समुद्र से घिरा है। भारत के आर्थिक हित एवं सैनिक हितों की पूर्ति में हिन्द महासागर की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत के पास कुल व्यापार का लगभग 90 प्रतिशत व्यापार हिन्द महासागर से होता है। भारत इस क्षेत्र के प्रति अपने बदले हुए दृष्टिकोण के पीछे राजनैतिक, सामरिक, आर्थिक व सामाजिक हित प्रमुख है।

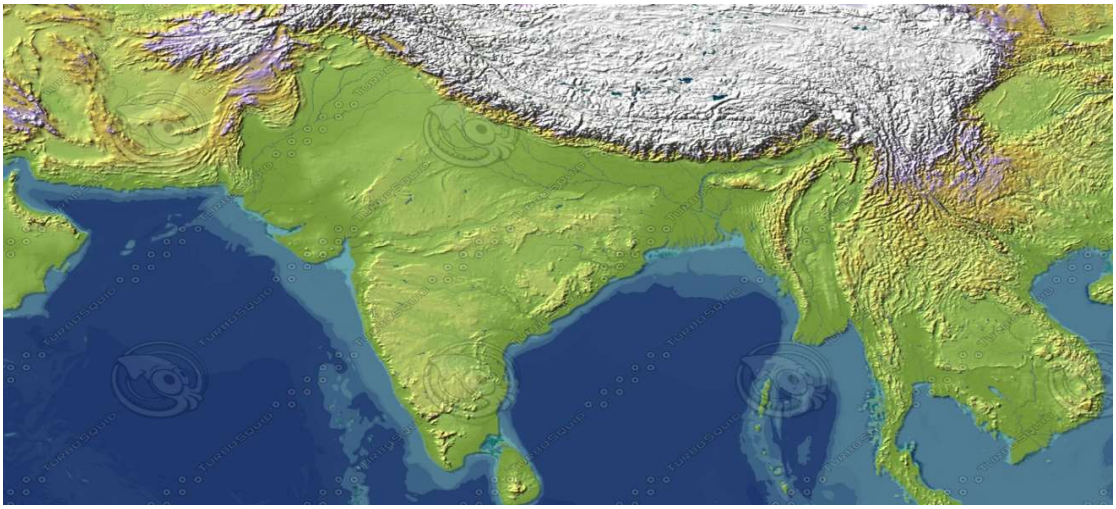

राजनैतिक हित– राजनैतिक रूप से इस क्षेत्र में होने वाले घटनाक्रम से भारत के विभिन्न हितों को खतरा है–

1. भारत इस क्षेत्र को पनप रहे शीतयुध्द को अपनी सीमाओं से परे रखना चाहता है।
2. अमेरिका, पाकिस्तान, चीन तथा जापान के उभरते गठबन्धनों से भारत का परिरोधन के साथ–साथ उसके दूरगामी हितों के लिए भारी आघात था।
3. अमेरिका द्वारा सैन्य विस्तार तथा उसके द्वारा खाडी में गल्फ कोऑपरेशन कौंसिल जे. सी. सी. के माध्यम से उसकी उपस्थिति की विरोधी था।

सामरिक– सामरिक रूप से यह क्षेत्र बाह्य शक्तियों की दृष्टि में ही नहीं, अपितु भारत के लिए अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत के पास कुल 247 द्वीप है, जिसमें 204 द्वीप बंगाल की खाड़ी में तथा 36 अरब सागर में स्थित है

भारत की स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,106.7 किमी. भारत की प्रादेशिक जलीय सीमा आधार रेखा से मापे गये समुद्री मील तक है, जबकि संलग्न क्षेत्र की दूरी प्रादेशिक जलसीमा से आगे 24 समुद्री मील तक है। इस क्षेत्र भारत को स्वच्छता के प्रबन्धन करने की सीमा शुल्क की वसूली अधिकार प्राप्त है। देश का अनन्य आर्थिक क्षेत्र संलग्न क्षेत्र से आग 200 समुद्री मील तक है, जिसमें वैज्ञानिक शोध एंव प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन किया जा सकता है। प्रायः देखा जाय तो भारतीय लोग हिन्द महासागर का कम इस्तेमाल कर पाये हैं इसकों अधिकाधिक उपयोग प्राचीन काल के आक्रमणकारी एवं यूरोपीय व्यापारियों द्वारा व वर्तमान समय में सभी तटवर्ती देशों द्वारा किया जा रहा है। इसका उपयोग प्राचीन काल से वर्तमान तक किये हैं। पुर्तगालियों ने इस पर कब्जा इसी प्रकार भारत पर किया था।

आर्थिक हित– भारत का 90 प्रतिशत व्यापार समुद्री मार्ग से होता है। भारत तेल व खनिज तेल, प्राकृतिक गैस हेतु काफी हद तक खाड़ी देशों पर निर्भर है। खनिज सम्पादन की दृष्टि से भी भारत अपने 200 किमी. एकाधिकार आर्थिक क्षेत्र का उपयोग तभी उठा सकता है जब इस क्षेत्र में शान्ति हो।

सामाजिक हित– सामाजिक सन्दर्भ में भारत इस क्षेत्र के प्रति अनदेखी नहीं कर सकता। भारत के इन देशों में निवास करने वाले भारतीय मूल के व्यक्तियों के हित भारत से जुड़े है। विदेशों में बसे भारतीय कई बिलियन डालर प्रतिवर्ष भारत भेजते हैं।

भविष्य में भारत को अपनी सुरक्षा से निम्नलिखित कार्य करने होंगे–

1. भारत को सुरक्षा के साथ ही साथ इस क्षेत्र में स्थिति द्वीप समूहों की सुरक्षा का दायित्व भारतीय नौसेना का है।
2. 21वीं शदी में भारत एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में विकसित होगा। ऐसी स्थिति में भारत को अपने व्यापारिक एवं आर्थिक हितों कि सुरक्षा के लिए अपनी नौसेना को पूर्ण आधुनिक व शक्तिशाली बनाना होगा।
3. 21वीं शदी में यदि अमेरिका, चीन व रूस आदि महासागर में सैनिक एवं आर्थिक रूप से शक्तिशाली हुए तो वे भारतीय तथा तटवर्ती राष्ट्रों की सुरक्षा के लिए चुनौती प्रस्तुत कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में भारत को अपने हितों की रक्षा के लिए आवश्यक है कि वह इस क्षेत्र में स्थिति जलमार्गों को खुला रखें और उस पर नियंत्रण बनाये रखें।
4. सैनिक, आर्थिक एवं तकनिकि दृष्टि से हिन्द महासागर के अन्य राष्ट्रो को सहयोग करना जिससे कि वे अलगाव न उत्पन्न कर सके।
5. भारत के निकट स्थिति कुछ द्वीप समूहों तथा राष्ट्रों जैसे मालद्वीप, श्रीलंका, मारीशस आदि संकट के समय भारत से सहयोग की आशा रखते है। पूर्व में भारत ने समय–समय पर इनको मदद किया है।

भारत को समुद्र में शक्ति सन्तुलन स्थायित्व करने के तीन चरणों वाली नीति होगी जो निम्न है–

1. Zone of soft control– भारत को अपनी नौसैनिक शक्ति का विकास इस स्तर करना होगा कि वह इस रूप से आत्मनिर्भर प्राप्त कर सम्पूर्ण हिन्द महासागर पर न केवल नियन्त्रण प्राप्त करे वरन् किसी भी चुनौती का सामना करने की स्थिति में हो।
2. Of positive control – इस चरण में अपनी नौ सेना शक्ति का इस तरह करना होगा, जिससे अपने तट से लेकर 500 किमी. तक सुरक्षा कर सके।
3. Zone of medium control– इसके अन्तर्गत भारत को अपनी नौसैनिक का विकास इस स्तर पर करना होगा कि वह भविष्य में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हो सके, इसमें 500 किमी से 1000 किमी तक अपना नियन्त्रण स्थयित करना।

निष्कर्ष–

ज्यादातर मामलों में हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर फैसले प्रभावशाली और शक्तिशाली देशों के द्वारा छोटे द्वीपीय देशों की सहमति के बिना ही लिए गए हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में स्थित छोटे द्वीपीय देश अपनी सामरिक स्थिति का फायदा उठा सकते हैं और इसका इस्तेमाल बड़ी ताकतों को अपने सुरक्षा हितों एवं मुद्दों को स्वीकार करवाने में कर सकते हैं, इस समय की आवश्यकता है छोटे द्वीपीय देशों की महत्वपूर्ण भागेदारी के साथ मजबूत गठबंधनों और क्षेत्रीय समूहों का उभरना ताकि दूसरे किरदार उनके मुद्दों एवं हितों को नजर अंदाज न कर सकें। दूसरी तरफ, हिंद महासागर क्षेत्र के छोटे द्वीपीय देशों को निश्चित रूप से एक–दूसरे के साथ अपने सहयोग को मजबूत करना चाहिए। उन्हें हर हाल में एक सामूहिक प्रयास करना चाहिए, ताकि अपनी चुनौतियों एवं मुद्दों के बारे में दूसरे किरदारों को जागरुक कर सकें। भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में मोहरे की तरह दिखने के बदले छोटे द्वीपीय देशों को हर हाल में इस क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण भागीदार के तौर पर दिखना चाहिए। ये सुरक्षित और स्थिर हिंद महासागर क्षेत्र के लिए आवश्यक सोच, नीति और दृष्टिकोण में प्रमुख बदलाव है।

हिन्द महासागर वर्तमान विश्व व्यवस्था में केवल एक समुद्री क्षेत्र नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति–राजनीति का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा ने इस क्षेत्र को सामरिक दृष्टि से संवेदनशील बना दिया है। भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी नौसैनिक क्षमता को सुदृढ़ करते हुए क्षेत्रीय सहयोग, सामरिक दृष्टि, कूटनीतिक और अंतरराष्ट्रीय नियमों के माध्यम से शांति एवं स्थिरता बनाए रखने की दिशा में अग्रसर हो। यदि भारत संतुलित और दूरदर्शी नीति अपनाता है, तो हिन्द महासागर को प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग का क्षेत्र बनाया जा सकता है।

संदर्भ–

- बनर्जी, ब्रजेन्द्र नाथः इण्डियन ओशिन, व्हलपुल ऑफ अनरेस्ट, नई दिल्ली, 1984
- येवगेनी रूम्यांत्सेव रू हिन्द महासागर, शान्ति और सुरक्षा की समस्याएं, 1986

- चन्द्रा, सतीशः द इण्डियन ओशिन, अक्सप्लोरेशन इन हिस्ट्री, कॉमर्स एण्ड पॉलिटिक्स, सेज पब्लिकेशन, 1987
- मैकफर्सन, कीनियः द इण्डियन ओशिन, ए हिस्ट्री ऑफ पीपुल एण्ड द सी ऑक्सफोर्ड प्रेस, 1993
- भरत सरकार, विदेश मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट, 1993–94
- काल, रिचर्ड सिमरः इम्पायर ऑफ द मानसून, हरपरकॉलिन्स पब्लिकेशन, 1996
- भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट 1999–2000
- किर्नी मिलोः द इण्डियन ओसिन इन वर्ल्ड हिस्ट्री न्यूयार्क, 2004
- एमेस, ग्लेन जोसेफ, वास्कोडिगामा, रेनेसा क्रूसेडर, लांगमैन प्रकाशन, 2005
- पीयर्सन, माइकलः द इण्डियन ओशिन, टेलर एण्ड फ्रॉसिस पब्लिशर्स 2007 इण्डियान वि. वि.
- उंच. हववहसम
- तिवारी, रामचन्द्र, भारत का भूगोल, प्रवालिका पॉब्लिकेशनयूनिवर्सिटी रोड प्रयागराज, इलाहाबाद 2016